शुरू हुई, वह इस काज से शुरू हुई, जो माननीय सदस्य कह रहे है। इससे हम सब सहमत है। उन्होंने साशल काज को लेकर यह शुरूआत की। गरीबी दूर करने के स्लोगन से इसकी शुरूआत की। लेकिन उसका अल्टीमेट एण्ड क्या हुआ? स्लोगन दिए लेकिन जो उनका अल्टीमेट निशाना रहा वहा भी ध्यान रखना पड़ेगा। जहां तक सन्ट्रल गवर्नमेंट की तरफ से है, जो माननीय सदस्य ने व्हाइट बताया, पचायती राज Although is not a Home Ministry subject, yet let me assure you, Sir, that we have been insisting on it. Many States have not held the Panchayat elections until today. It is the Government of India which has been insisting that Panchayati Raj should be brought about because the Panchayti Raj is one system which can really galvanise the whole rural development. So, we are all aware of it. But as far as the Naxalite operations are concerned, the Central Government has given all possible co-operation to modernise the police system and to give the States whatever financial assistance is possible. Although law and order is a State subject, yet about Rs. 30 crores have been allocated to various States and West Bengal is also one of the beneficiaries of that allocation. So, I will assure the House that our efforts will continue till we really root out such activities from the country.

Death of Animals and Birds in Delhi Zoo

*124. DR. BAPU KALDATE: Will the Minister of ENVIRONMENT AND FORESTS be pleased to state:

(a) what is the approximate number of animals and birds which died in the Delhi Zoo in the year 1994 and how does this number compare with the deaths of animals and birds in 1993;

(b) what are the major causes identified for rising number of animal deaths in the Delhi Zoo;

(c) Whether Government have inquired into the appalling conditions in Delhi Zoo and also the extent of deficiency in the veterinary infrastructure;

(d) if so, what are the details thereof; and

(e) what measures have been taken by the Government to improve the situation in the Delhi Zoo?

THE MINISTER OF STATE OF THE MINISTRY OF ENVIRONMENT AND FORESTS (SHRI KAMAL NATH): (a) 172 animals and birds are reported to have died in the year 1994. The corresponding figure for the year 1993 was 171.

(b) Major causes of deaths are reported to be Pulmonary ailments, liver and intestinal disorders and infighting among animals.

(c) The Central Zoo Authority has evaluated the Delhi Zoo.

(d) and (e) A Statement is laid on the Table of the House.

Statement

(d) The evaluation committee set up by the Central Zoo Authority under the "Recognition of Zoo Rules, 1992" has drawn the attention, *inter-alia*, for immediate filling of the post of veterinary officer, training of staff, improving the quality of water and improving the enclosures of several species. Installation of incinerator for maintaining proper hygienic conditions has also been recommended.

(f) Following measures have been taken:—

(1) A panel of doctors has been nominated to give advice on treatment of animals.

(2) Director of the Zoo was deputed for 15 days capsule course on zoo management organised by Wildlife Institute of India.

(3) Desilting of moats around the enclosures of Nilgai and Lion tailed macaque has been completed to improve the quality of water.

(4) Improvement of enclosures of India Rhino, Gharial, Lion tailed macaque, Sikka deer and bird aviary completed. Works in enclosures for Jaguar, Panther, and Indian elephant in progress.

डा० बापू कालदाते : इससे ज्यादा गंभीर मसला आता मैं यह चाहता था। लेकिन यही निकल गया, कैसे यह निकल आया....

SHRI GURUDAS DASGUPTA: There is political infighting among the animals.

डा० बापू कालदाते : केवल वाइल्ड लाइफ एक्ट के बारे में ही क्यों पूछूं, इसके साथ सब पूछता हूं।

सभापति जी, मंत्री जी ने जो विवरण यहां दिया है, उससे यह पता लगता है--जो हमारी जानकारी है और उनका कहना भी है कि हर साल पशु और प्राणियों की मृत्यु की संख्या बढ़ रही है। आपने कहा है कि 171 से लेकर 172 तक है। लेकिन गए पांच सालों में 800 पशु या प्राणियों की मृत्यु हो गयी है और इसका सबसे बड़ा कारण यह है कि जो आधुनिक तन्त्र और आधुनिक यांत्रिक व्यवस्थायें चाहियें, उनकी कमी है। जैसे, दिल्ली जू है, यहां कहते हैं कि 1200 के करीब पशु या प्राणी हैं। इनके लिए यहां पर वेटेरनरी सुविधाएं कितनी हैं, तो जहां तक इस बारे में मेरी जानकारी है, वहां एक भी पूर्व समय की डाक्टर लेबल वाला या कोई हाई लेबल वाला कोई डाक्टर नहीं है। आपने कहा कि एक पैनल बना दिया है। लेकिन वहां तो 400 जानवरों पर एक डाक्टर के लिहाज से देखा जाये, तो कम से कम तीन सीनियर वेटेरनरी डाक्टरों की आवश्यकता है। यहां डक्टरों की कमी है, यांत्रिक सुविधाओं की कमी है, लेकिन इस कमी को पूरा करने के लिए सरकार ने क्या कोई ठोस प्लान बनाया है कि यहां इतने जानवर हैं और इनके लिए इतनी आवश्यकता है और इन आवश्यकताओं की पूर्ति हम एक साल में दो साल में कर देंगे ? इसके लिये आवश्यक धनराशि की व्यवस्था करके उनके हाथ में देने के बारे में आपने क्या प्रयास किए हैं ?

श्री कमल नाथ : सर, 1992 में सेंट्रल जू अथारिटी की स्थापना हुई। यह इसलिए की गयी थी कि इस सदन ने वाइल्ड लाइफ अमेंडमेंट प्रोटेक्शन बिल पास किया था और उसके अन्तर्गत सेंट्रल गवर्नमेंट जू आथारिटी बनी। इसके जो नियम और इसके जो रेगुलेशन बने उसके तहत उन्होंने दिल्ली जू की जांच की और उन्होंने उस पर अपनी रिपोर्ट दी है। उन्होंने जो कमियां दिल्ली जू में हैं, उसकी ओर ध्यान आकर्षित किया है। यह बात माननीय सदस्य की सही है कि वन्य प्राणियों को वेटेरनरी सुविधा के लिए जो स्पेशलाइजेशन होना चाहिए, वहां उसकी कमी है।

वहां जो वेटेरनरी आफिसर की पोस्ट है, वह भी काफी समय से खाली पड़ी है। अब सेंट्रल जू अथारिटी बन जाने के बाद मुझे पूरा विश्वास है कि जो दिल्ली जू में कमियां हैं, वह भविष्य में नहीं होंगी।

डा० बापू कालदाते : सभापति महोदय, मंत्री जी पर्यावरण के मंत्री भी हैं और इसलिए यह आपसे जुड़ा हुआ सवाल है कि दिल्ली जैसे शहरों में प्रदूषण बढ़ रहा है। इस प्रदूषण का असर चिड़ियाघरों पर भी पड़ रहा है। पशु-पक्षियों को जीने के लिए जिस ढंग का पर्यावरण चाहिये जैसे कि कंक्रीट वाल्ज बनाते हैं तो उसमें जानवरों को ठीक इनवायर्नमेंट नहीं मिलता है जिसके कारण उनकी मृत्यु तक हो जाती है। इस प्रदूषण से बचने के लिए उनके जीवन की दृष्टि से जो पर्यावरण आवश्यक है, वह उनको मिलना चाहिये। जैसे

आजकल कहा जाता है पर्यावरण फ्रेंडली, नेचर फ्रेंडली, इस प्रकार का वातावरण, आवश्यक है । मैं यह जानना चाहता हूं कि यह जो आवश्यकता है, इसको पूरा करने के लिए क्या कोई अध्ययन हुआ है कि प्रदूषण से जानवरों को बचाने के लिए क्या करें, इनवायर्नमेंट फ्रेंडली वातावरण देने के लिए क्या करें ? इस दिशा में कोई अध्ययन हुआ है या नहीं हुआ है और यदि अध्ययन हुआ है तो जहां कंक्रीट वाल्ज़ खड़ी की गई हैं जो कि पशुओं के लिए अनावश्यक हैं या उनके पर्यावरण की दृष्टि से गलत हैं, इसको ठीक करने के लिए सरकार ने क्या प्रयास किया है ?

श्री कमल नाथ : सभापति महोदय, दिल्ली जू की स्थापना 1959 में हुई थी। उस समय जो इसका डिजाइन बना था, जो ले-आऊट बनाया गया था, वह इस उद्देश्य से बनाया गया था कि सब पशु-पक्षियों का जो नेचुरल हेबीटेंट है, जितना उसके हम करीब बना सकें उतना बनाएं। इसमें जहां तक कंक्रीट का सवाल है, जब कोई केज बनेगी, दीवार बनेगी तो कंक्रीट की बनेगी । परन्तु साथ साथ यह प्रयास किया गया था कि इसके लिए ले-आऊट इस दृष्टिकोण से हो कि जानवरों का नेचुरल हेबीटैंट इमीटेट किया जाए । जहां तक प्रदूषण का सवाल है, यह केवल दिल्ली जू के लिए चिन्ता का विषय नहीं है, पूरी दिल्ली के लिए चिन्ता का विषय है । हमने कई कदम उठाए हैं । सब से बड़ा कदम यह है कि यह जो दिल्ली में वायू प्रदूषण बढ़ रहा है, पहली अप्रैल से कुछ दिनों बाद 65 प्रतिशत जो वाहनों के प्रदूषण का बोझ है, उसका आवेग कम होने की उम्मीद है क्योंकि अब अनलेडेड पेट्रोल और केटेलिक कनवर्टर्ज़ के साथ जो मोटर वाहन हैं, उनका उपयोग किया जाएगा । जैसे ही दिल्ली में सुधार आता है, अब दिल्ली के लिए और जू के लिए कोई अलग पर्यावरण नहीं होगा (**व्यवधान**)

डा० बापू कालदाते : जैसे ताज के लिए कर रहे हैं । (**व्यवधान**)

श्री कमल नाथ : दिल्ली में जो विकास और आबादी का दबाव है, पिछले 20 सालों में जितना बढ़ा है, उसका बोझ आज दिल्ली वालों को झेलना पड़ रहा है । यह जो प्लान हमने बनाया है भविष्य में केवल जू के लिए यह नहीं है, पूरे दिल्ली के निवासियों को इससे राहत मिलेगी ।

श्री ओ० पी० कोहली : सभापति जी, मैं जो प्रश्न पूछ रहा हूं, उसका हल्का सा रेफ्रेंस अभी आ चुका है । मेरा प्रश्न यह है कि दिल्ली जू में जानवरों की संख्या को देखते हुए जानवरों के विभिन्न प्रकारों को देखते हुए कितने वेटरनरी डाक्टर्ज़ की ज़रूरत है और उसमें से कितने पद खाली पड़े हैं, कब से खाली पड़े हैं, उनके खाली पड़े रहने के कारण क्या हैं और यह पद कब भर लिए जाएंगे ?

श्री कमल नाथ : सभापति महोदय, दिल्ली जू में वेटरनरी क्लिनिक है जिसमें जो जानवर बीमार या घायल हो जाते हैं, उनके इलाज के लिए व्यवस्था है । इस क्लिनिक यूनिट में एक वेटरनरी आफिसर, एक असिस्टेंट वेटरनरी आफिसर, एक कंपाउंडर, एक लब असिस्टेंट और तीन अटेंडेंट हैं । एक वेटरनरी आफिसर की पोस्ट, मैंने अभी स्वीकार किया था, काफी समय से, कुछ सालों से खाली पड़ी है ।

श्री ओ०पी० कोहली : कारण क्या है ?

श्री कमल नाथ : सभापति महोदय, जिस प्रकार का हम वेटरनरी आफिसर चाहते थे, उस प्रकार का नहीं मिला । परन्तु अब इसमें प्रयास किया जा रहा है कि यह जो वेटरनरी आफिसर की पोस्ट है, इसको जल्दी फिल-अप कर दिया जाए। वेटरनरी आफिसर अभी हुआ नहीं है पर हमने दूसरे वेटरिनरी डाक्टरों की सहायता और उनकी सर्विसेज का उपयोग किया है । इसमें कमी जरूर है यह मैं मानता हूं और सेंट्रल जू अथारिटी ने भी इस पर हमारा ध्यान आकर्षित किया है । इस पर पूरी कार्यवाही हो रही है ।

श्री ओ० पी० कोहली : सभापति जी, क्या मंत्री जी यह बता सकेंगे कि वेटरिनरी आफिसर कब तक एपांइट हो जाएगा ।

श्री कमल नाथ : बहुत जल्दी ।

श्री शंकर दयाल सिंह : यह जो दिल्ली का चिड़ियाघर है यह बहुत पहले ऐसे समय में बना था जबकि उसके आस पास की जमीनें खाली पड़ी थीं और बहुत अधिक दूसरी दूसरी चीजें नहीं बनी थीं । प्रगति मैदान में अब जब विश्व व्यापार मेला लगता है तो उससे काफी भीड़ भी होती है और बहुत सारे लोग भी आते हैं । ऐसा लगता है कि दिल्ली चिड़ियाघर अब छोटा भी पड़ रहा है और ऐसी जगह पर स्थित है जिससे वातावरण के कारण, उस पर बुरा प्रभाव पड़ेगा । क्या सरकार इस बात पर विचार करेगी कि चिड़ियाघर उस स्थान से हटाकर किसी ऐसे स्थल पर ले जाया जाए जहां ज्यादा खुली जगह हो तथा जानवर और पक्षियों के लिए ज्यादा मुफीद हो ? क्या सरकार इस पर गम्भीरता से विचार करेगी या कर रही है, इस संबंध में मंत्री महोदय स्पष्ट उत्तर देने की कृपा करें ।

श्री कमल नाथ : सर, यह बात सही है, कि जब दिल्ली का चिड़ियाघर बना था उस समय इतना बड़ा प्रगति मैदान नहीं था जहां विश्व व्यापार मेला लगता है । यह भी बात सही है कि आस पास की आबादी इतनी नहीं थी । पर आज के दिन जो हमारा जू है जो 178 एकड़ में बसा हुआ है, हम समझते हैं कि इसको शिफ्ट करने की, हटाने की, मूव करने की कोई आवश्यकता नहीं है क्योंकि इसमें और भी कुछ खुली जगह है । पर अगर जू में और कोई जानवर लाने की योजना बने और जगह की कमी महसूस हो तब इस पर विचार किया जा सकता है ।

श्री शंकर दयाल सिंह : एक बात आप सोचिए कि बाहर आपने देखा होगा इतनी भीड़ लगती है, इतनी गाड़ियां लग जाती हैं कि रास्ता जाम हो जाता है । गाड़ियों को पार्क करने की जगह नहीं है । यह भी एक बड़ी समस्या है इसलिए मैं जानना चाहता हूं ।

श्री कमल नाथ : यह बात सही है, मैंने यह स्वीकार किया है कि आस पास की आबादी बढ़ी है । जहां तक गाड़ी-पार्किंग का प्रश्न है, जू में आने वालों की संख्या बढ़ती जा रही है । अगर ऐसी कोई योजना बने...

श्री इन्द्र कुमार गुजराल : ऐसी योजना कौन बनाएगा ?

श्री कमल नाथ : अगर ऐसी योजना बने कि दिल्ली जू को बढ़ाने का प्रश्न हो तब ऐसी किसी चीज या प्रोजेक्ट पर विचार किया जा सकता है । आज के दिन दिल्ली जू को शिफ्ट करने का कोई इरादा नहीं है ।

MR. CHAIRMAN: The interest in the zoo is really refreshing!

SHRI JAGMOHAN: Sir, I would like to know whether it is a fact that the Railways have constructed some sheds illegally behind the Delhi Zoo and the Zoo authorities have protested against it saying that this is against the rules, against the law and against the environment and that it is causing damage to the Zoo. I would also like to know whether that very land, which is available, could be used for expansion of the Delhi Zoo or not.

SHRI KAMAL NATH: Sir, I will send a reply to the hon. Member. I am not aware of any encroachment by the Railways on the Delhi Zoo. But there has been encroachment in a section by the Trade Fair Authority which is having in its possession some of the land belonging to the Zoo which it wants to use for parking, etc. It is not the Railways, but the Trade Fair Authority. This matter has been taken up with the Ministry concerned and is still being resolved.